



विनयप्रकाश

بقیے پر کاس

बालदासीरचित

जिसमें

श्रीदशरथकुमार परब्रह्म परमेश्वर निराकार ज्योति-
स्वरूप रामचन्द्रजीमहाराजकी ललित भजना-
वली भक्तोंके आनन्दकेलिये वर्णित है ॥

श्रीरामचन्द्र प्रेमानुरागियोंके प्रेमानुरागार्थ

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरके छापेखानेमें छापीमई ॥

अगस्त सन् १८८६ ई० ॥

दूसरीबार ६००



विनयप्रकाश

अवगुणनाथ तुम दिव्य मेरी मति करो । गौरीनंदन कृपा
करि मेरी दुरमति हरो ॥ शिवसुत अनादि ब्रह्म मेरी कष्ट दु-
ख हरो । अनाथ नारी जानि प्रभु भव जंजाल दरिद्र हरो १
मेरी विश्वनाथ के चरण चित लांगी । शिवसमान दाता
नहिं जगमें पापिन को नहिं त्यागी ॥ तारक मंत्र देइ सबन
को तारत बार न लागी । बालनारी ठाढ़ी देवढी पर मुक्ति
हेतु बर मांगी ॥ सब विप्र मिलि अर्ज सुनिये मैं हों दुख में
सानी । भूसुर की मैं पद अब बंदों करिये मेरी निगह बानी ॥
अवगुण मेरी चित नहिं धरिये तुमहों कृपा को खानी ।
नारी लखि शरण मोहिं दीजै हरिये मेरी अज्ञानी श्वहीं
जावश्याम जहां रह्यो रतियां । चित तुम्हारी और ठौर है
झंठी झंठी कहत मोसों बतियां ॥ मुख भर हमसों प्रीति
और सों मैं खब जानी तुम्हरी बतियां । मैं सब विधि तुम्हरी
हों प्यारी वृथा काहे करती तैं रिसियां ॥ तैं तो मेरी प्राण
प्यारी है यह कहि नाथ लगावहु छतियां । मैं नारी तुम
नाथ हमारे तुम्हरे हाथ हमारी गतियां ३ शरण की लाज

करो रघुराई । माया फेरिकै मति भ्रम कीन्हौ मोसन
 कछु न बसाई ॥ होतुम परमसुजान कृपानिधि वेदपुराण
 नगाई । नारी जानि कृपा प्रभुकरिये बहुतकाल भरमा-
 ई ४ नाथ सोंकोइ अरजकरै मेरी । हैं अनाथ कहं ठौर न
 मेरी दीनानाथ शरणहैं तेरी ॥ कबतुम खबर लेहु गे स्वामी
 महामोह मायाने घेरी । करनी पर प्रभु चेत न करिये
 दीजै भक्ति चरण निजकेरी ५ हमरी सुरति करो यदुराई ।
 हाथ जोरि विनती प्रभु मेरी संकटमें होउ सहाई ॥ तुम
 बिनु कोई सहाय न स्वामी रक्षाकरो बेगही आइ । नारी
 लखि अवगुण विसरावो दीजै पार लगाई ६ प्रभु बिनु बूझै
 को दिलकी बतिया । उन बिनु नयन चयन नहिं आवै
 दरकी दरकि उठै मोरि छतिया ॥ जब लगि कृपा करो नहिं
 स्वामी तब लगि थिर न रहै यह मतिया । काह करों कछु
 बश नहिं मोरे नारिकि बुद्धि नीच मोरि जतिया ७ जो
 कोइ रामचरण मन लावै । अर्थधर्म कामादि मनोरथ तुरत
 मोक्ष पद पावै ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह सब सकल
 कपट विसरावै । यह विधि तजै भजै रघुनाथक विषय आश
 नहिं भावै ॥ अधम उधारन बिरद तिहारो सकल संत श्रु-
 ति गावै । नारी जानि दया अवकीजै भक्ति बिमल बर पा-
 वै ८ नाम से सुरति मति भलि जावो प्रेमसों उसीको सुरति
 लगावै । इस जगत में कोइ काम न आवै फेरि ऐसी जिंदगी
 नहिं पावै ॥ जोइ सान अपने मालिक को न गावै । इसलिये
 बेहक को काफर कहावै ॥ मुझ और तबद को मको प्रभु नाथ
 बचावै ९ ॥ रखता हारो ॥ चलो सखि श्याम सों खेलौ

होरी ॥ बरसानेसों चलीं ग्वालिनो आई ब्रजकी खोरी ।
 इतते आये नन्दके लाला उतवृषभानु किशोरी ॥ बड़े धम
 की होरी मची है सुनत नही कोइ टेरी । राधा बाहँ गहि कै
 मोहन मुख चूमि करत बरजोरी ॥ छीन पिताम्बर कम्बर
 दीन्हो मीजि कपोलन रोरी । कैसे वर्णन करों यह फाग
 की मैं नारी की मति भोरी १० ॥ भजन ॥ सुनु सखि
 श्याम प्यारे बिन मोसों नहि रहि जात । घरि पलक्षण
 मोहिं कलन परत है बेधत है मेरे गात ॥ कहाँ लगि धी-
 रज धरौरी आली यह जीव निकसि न जात । मोहिं ना-
 रीकी आश यदुनाथकी दरशन लगि लोचन ललचात ११
 यह पापी जियमें रामको नाम न बसी । ऐसी कमी
 भई है मोसों सब जहानमें हँसी ॥ काह कहैं कछु बश
 नहि मेरो माया के बशमें गँसी । अन्तकाल जब आइ
 पहुँचि है यमके हाथमें फँसी ॥ जो जन भक्तिभाव नहि
 जानै ताके मुख लगि मसी । अब अपराध क्षमा प्रभु
 कीजै नारि सुभावसों खसी १२ दिलदार मिला मेरा
 साहबजी । सकल लोकके नायक जी ॥ वो तो सबजन
 के दायकजी । मोहिं दासीको बरदे मन भावतजी १३
 अपने रामके कारनवां अब मैं योगिनि होंगीजी । तन
 मन धन सब वारिकै वापर योगिनि रूप धरौंगी जी ॥
 जब मिलैं रघुनाथ पियारे तब यह सुफल करौंगी जी ।
 नारि जानि दरशन अब दीजै यह अभिलाष गहौंगी
 जी १४ मोरे जियको हो बतिया कछु न सोधाये ।
 घरि पलक्षण मोहिं कलन परत है रहि रहि जिय अ-

कुलाये ॥ जब लगि राम कृपा नहिं करिहैं जन्म अ-
कारथ जाये । अभै शरण दीजै रघुनन्दन दासिकि दुख
मिटजाये १५ राम कहु रामकहु रे मन बावरे ॥ धोखे
में जन्म जात येहि येही विचारुरे । सन्तन मिलि बैठि
बैठि सब मन तावरे ॥ होंगे दयालु तब सांवलियाशा-
हरे । मोहिं दासीको दीनजानि प्रभु बेगि करौ भवपार
रे १६ मोहिं राम मिलनकी आस । सब सन्तन के पद
में बन्दों पहुंचावहु प्रभु पास ॥ यह कलिकाल कठिन
है निबहन यहां नहीं है बास । नारी लखि सुकृपा अब
कीजै लगि चरण में श्वास १७ राधा कहत भवबाधा
मिटतहै । जो जन तुम्हरे चरण मनलावै ताकी सबमर
यादबढ़तहै ॥ श्याम पियारी वृषभानुदुलारी सुरनरमुनि
सब ध्यान करतहै । दासीकि अर्ज सुनो महरानी तुम्हरे
कृपा बिनु गति न बनतहै १८ रे मन काहेन करत पर-
तीति । बार बार मैंकेतकसमझावों नाथसों करुप्रीति ।
बहुतगई थोरी नगिचानी अजहुं धरुतैनीति ॥ कहामानु
भजु राम कृपानिधि जात औसर बीति । उदर लागि
बहु कृत तुम कीन्ही सहेघाम अरुशीति ॥ धर्मराजजब
आस देखेहैंके मिलिहै तोहिं हीत । दासी लखि सुकृपा
प्रभु कीजै करिये निर्मल चीत १९ कारो बदरानेको न
भावै । फुहि फुहि बुन्द परतहै सजनी बिरहा अतिहि
सतावै ॥ क्षणक्षण बिजुक्छटा चमकतहै कान्हविना मेरी
जिय डरपावै । मोहिं नारी की सुनत कोऊनहिं यहदुख
को श्यामबिनु मिटावै २० मन तुमसदा कुमारग ठानी ।

सबै जन्मतेँ वृथा गवांयो होत जीवमेंहानी ॥ मैं चाहति
 हैं रामभजनको आपु करत बेमानी । दासीजानि शरण
 प्रभुदीजै मैंतेरेहाथ बिकानी २१ श्याम सुन्दर दिलदार
 कैलसों लागी लगन हैरी गुइयां ॥ माथेमुकुट मनोहर
 राजै मकराकृत कुण्डल श्रुतिमहियां । चंदनभाल खौर
 अति सोहै पीतपिछोरी काँटितट महियां ॥ हाथे लकुटि
 मुरलिया लीन्है कबहुंबजावत ब्रजमहियां । थकेदेवचर
 अचर चराचरसुधि न रहतहै तनमहियां ॥ रूपअनपमा-
 रमद मोचन आनि बसै सखि मनमहियां । दासीजानि
 शरण प्रभुदीजै लेहु उबारि अब गहि बहियां २२ दीना-
 नाथ बूझोमेरीपीर । सबविधि राम भीर तुमहींको लगा-
 वो जहाज अबतीर ॥ निरअवलंब जानि मोहिं स्वामी
 करो माफ़तकसीर । दासीकि अरजसुनत प्रभुनाहीं कैसे
 धरों मैं धीर २३ काहे मेरी सुधि विसराई जगन्नाथ ।
 कैसे धीरजधरों स्वामी तुम बिनु भईहैं अनाथ ॥ खबरि
 खोज छाँड़ि प्रभु दीन्हो केहिविधि होवै सनाथ । बाल
 नारि अथाहमें बूढ़तिहै कृपाकरि उबारो गहिहाथ २४
 मोर जियरा रामकोनामतेँ भज । सकलव्योहार भूठा
 है जगतको सांचा कारजसज ॥ अजहूं शोच समुझरे
 मनुवा माया मोह तज । रघुनाथ दाताको सुमिरुरे मूढ़
 नारि सुफल होइहैं सबकाज २५ सुन्दर श्याम सुजान
 रामकृवि देखि न मनथिर रहत सबनको । मेरेमन अभि-
 लाष बढ़तरघुनाथ चरणमें लपटिरहनको ॥ भाग्यअधीन
 पुण्यपूर्वजको होइसहाय तबपावै दरशनको । बालनारि

प्रभुदासकी किंकरि पुरवहु आश पद देहु गहनको २६
 मोहिं ऊपरद्रवहुरघुनन्दन । जोतेरोसुयशकहत नितप्रति
 होवहोवत जगवन्दन ॥ शवरी गणिका गृध्रअजामिल
 नामप्रताप गति पाइअनन्दन । अब मोसौरहिजात न
 कैसेहुप्रभुकीमहिमा सुन्योमुखसन्तन ॥ ऐसीकृपाकरो
 मेरेस्वामी जेहिबिधिमिटै मेरीमति मन्दन । बाल नारि
 को पावन कीजै करिये अपनी पदकी सज्जन २७ ऋषि
 जी प्रभुजीसों कहियो अरज मेरीजाय । औगुण अकाम
 जानिकै नाथदुखदेत अरुझाय ॥ सबविधि भरोसाचरण
 को स्वामी काहे मारत भरमाय । बाल नारि अथाह में
 बडति है कृपाकरि उबारो अबआय २८ अजहुं न आये
 मेरे नाथ गिरिधारी । बारी समयमें नेहलगाई अबविर-
 हाअनल में मोको जारी ॥ बन्शीबजाइचित लीन्हो
 चुराई अबश्याम मेरी सुद्धि बिसारी । नारी अबलन
 संग कीन्ही खोटाई वह यश फैलिरही जगतेरी २९
 दया करो अब आदि भवानी । तीनि लोकको पालनक-
 रनी ॥ सुर नरमुनिबंदतहैं चरणन पायोहै सब वरमन
 भावनी । बाल नारिकी संकट हरिये तुमहौ माता मेरी
 दुखमंजनी ३० मेरी सुधिलेते क्योंनहीं रघुनाथ । तुम्हरी
 कृपा बिनुभईहैं अनाथ ॥ कैसे धीरजधरौ यह जियको
 कब करोगे सनाथ । बालनारिको कष्ट बहुत है धावहु
 बेगि अब नाथ ३१ यशुदागोद खेलावत सुत करि जा-
 नत नहिंजगनाथ मुरारी । पूतनाकुलकरि ब्रजमेंआई पय
 संगप्राणहरे गिरिधारी ॥ पलना ढिग कागासुर आये

कंठपकरि कंस आगेडारी । यमला अर्जुन हेतु कृपानिधि
 अपने कटिमें बंधाये जेवरी ॥ नन्दके गृह बाल कहावत
 कंस दैत्य के हैं अरो । दावानलको पान कियो है सब
 पुर भइ जैजैकारी ॥ असुर अनेकन बलकरि आये सब
 को मारि हरी दैत्यारी । नारीके दुखमें धावतनाहीं हरि
 वह भुजबल कहां गई तिहारी ३२ रघुवीर सुन्दररूप
 निरखि के मेरो छुटको है नैना । कैसे बर्णन करें राम
 की मुखनहिं आवत है बैना ॥ जापर कृपा करो मेरे स्वामी
 ताके हृदय कि खुलि है ऐना । बाल दासि प्रभु चरण कि
 किंकरि तुम बिनु नाथ न पावों चैना ३३ नाथ अरज अब
 सुनौ कृपाकरि मैं तेरो नाम रटत पुकारी । बालापन
 को नेह छोड़िके काहे निठुर तुम भयो है मुरारी ॥ गाढ़ी
 प्रीति अथाह भई है बिरह सागर बूढ़ि मां भेधारी । कैसे
 धीरज धरों श्यामजी मैं नारीको आश तिहारी ३४ नाथ
 के भजन बिनु खावै मन गोता । जब यमदूत आइके पहुंच-
 चिहैं गरे फांसी लाइ करिहैं तोर नेवता ॥ सब चतुराई
 भलि तोरि जै है घर से निकालि लेइहैं जब तोता । अज-
 हुं चेतरे जड़मति नारी भजु तैं नाम राम अरु सीता ३५
 लगी है नेह जानकी नाहसों । सर्व सिद्धि फल पावत राम
 सों ॥ अवर कष्ट हरत नहिं मनसों । बरु जीव निकलि
 जाय यह घरसों ॥ दूसरी बात सुनों न कानसों । बाल
 दासीपर कृपा प्रभु कीजै अपनी दरश देखावो मेरे नेत्र
 सों ३६ ॥ घायो ॥ सालिकराम सुनो मोरि बिनती बिगड़ी
 सुधारनहार मोरे राम । मैं नारी कर्म धर्म सेहीनी कृपा

करि उतारि दुख पार मोरे राम ३७ डोरिया लगावो
मेरे रामा मैंतो जाऊं बन्नीनाथ । दासीकेर मनोरथ
पुरवो दरशन दे अबनाथ ३८ लागी गैलोनाथ पदकी
प्यास मोहे रामलागीगैलो । नदासी जानै योगतपकछु
नाहींहै दूसरी आश अबराम लागीगैलो ३९ दुखजाल
पड़ी मोहे रामा कैसेउबरवहो । बालनारीकोआशतिहा
री तुमहोप्रभु अंतरयामी कष्टबूझोहो ४० बातनमाने
मेरोमनहै अनारीहो रामा । बालदासीको नाथनेवाजो
सब विधिहोवै सनाराहो रामा ४१ दासीपर बहुत
नावल भवजाल होरामा । जो मोर जनम दोहलगी
सइयां काहेन करत प्रतिपाल होरामा ४२ ॥ भजन ॥
संकटके हरवइया गोविंद नारायण दामोदर हो ।
सकल सिद्धान्तकेदेनेवाले मेरेरामनायकहो ॥ सबजगत
को पालनकर्ता वामन कृष्णमुरारी हो । बालनारीपर
दया करिकै हरिये मेरी पीरभारीहो ४३ दीनदयाल
दया नहिं तोहे सुरनरमुनि सबजोहैं तोहै । गघर
लगाय तुकबचन कहाये ऐसो प्रभुनहिंचाहिये तोहै ॥
जोचाहो सो आपे करिये क्या किसीकाडरहै तोहै ।
सब विधिसेहैं चैरीसेतेरी भरमाय मारतहै मोहै ४४
कलनपरत दिनरतियां छतियादरकि उठति मोरी ।
कौनउपाय करें अब स्वामी करनीने दुखसागरबोरी ॥
तीनोंयुगहैं धर्मकी मूरति कलियुगमेंहैं बहुतपेरी । कव
नो उपाय दासी उबरैगी नाहीं जोहत में प्रभु बाटतेरी
४५ श्याम मोसों मलिकरो बरजोरी । दधि माखनकी

कौनचलावे करतहौ चितकीचोरी ॥ यशुदाजीसे जाय
 कहोंगी पीछे दीजो मतिखोरी । तुमतौ हौ त्रिभुवन
 के स्वामी मैं हौ दासी तेरी ४६ निरदइके पाले दइ
 मोहिं डारे कवन बातकी चकभई । बरुमोहिं देहुन-
 रक कुण्ड डारी ऐसी संगति बहुरि नहिं आई ॥
 करम सुभाव कि करनि खुटाई एकीगती जानि नहिं
 जाई । बाल दासीपर कृपा प्रभु कीजै दुख जंजाल से
 लेहु छुड़ाई ४७ रंगिले खेलसौं लागी लगन । सबही
 विधिसे उनहीं की शरन ॥ नाथके कृपासे हम होवैं म-
 गन । बालदासीपै करिये ढरन ४८ परी मोको राम
 रटनकी बान । सब जगमें धिक्कार भईहों कासे करों में
 मान ॥ नामकि लाज करो अब स्वामी तेरोहि पद को
 ध्यान । नारीदेखि दया प्रभुकीजै अबगुणपै नहिं करिये
 कान ४९ दई इकअंगी प्रीति नहिं भाती । निशि दिन
 पपिहा पिय पिय रटतहै नहिंवरसत सेवाती ॥ बारिसे
 बिछुरत मीनतनत्यागी जलकी नहिंफाटी छाती । दीपक
 में पतंग जर मरतहैं फेर बहुरि न जाती ॥ चकोरचंद
 हित अंगार चुनतहै दधिसुतको दयानहिं आती । मोहिं
 नारीको प्रभु भवजालसे उबारो तुमहौ लायक सबभां-
 ती ५० नाथ सुनतनाहीं अरज हमारी । बालापन को
 नेह छोड़िकै अब भइ कुब्जा कृष्णकी प्यारी ॥ कवनउ-
 पाय करों मेरि आली श्याम मोहिं दीन्हों बिरह दुख
 भारी । मैं नारीकी आशछोड़िकै कान्हने सवति शालसों
 मारी ५१ नवल श्यामा नवलहै श्याम नवल कुञ्जवन

क्रीड़ा करें । नवल प्रीति नवल पट भूषण नवल कमल
पत्र विहार करें ॥ नवल गोप नवल गोपी सब नवल
वंशी अधर धरें । नवल शृङ्गारपर दासी बलिजाइ होइ
घन्य जत्र कृपा करें ५२ निरमोहिया नाथरी सुधि बि-
सराई । कैसे जानों कि प्रभु गरीब नेवाजहैं बहुत मोहिं
भरमाई ॥ बालापनसे शरण में गहिके आखिर अंकहि
भरपाई । गिलामें किसकी करें अपने वेजांयकी आश
लगाये भरपाई ॥ कर्म रेखकी पाती बांचे काऊ पार
न पाई । दीन नारि पर द्रवत नाहिं प्रभु धनी पर मन
लाई ५३ अभिलाषपुरैया मेरेदाता सालिकराम । तुमतौ
प्रभुहौजननके हितकारी सबविधिसे सवांरो अबकाम ॥
दुखसागरमें बूढ़ी व्याकुलहैं स्वामी यह गतिहै अस्ती
लगी चाम । बाल दासीपर निगाह नेक करिये वेगि
बुलाय लेहु अपने धाम ५४ मेरी पति राखौ श्रीभग-
वान । तुम्हरी कृपाबिनु भईहैंहैवान ॥ बहुतदुःख सहेउं
में स्वामी तुम बिनु राखे को मान । बालदासी की औ-
लम्ब दूसरी नाहीं सबविधि तेरोहि ध्यान ५५ हमारे
मन ध्यान श्रीरघुवीर । सब लोगनकीबातेसुनिके लागत
जनु मोहिं तीर ॥ औगुण बिसराये नाम आपनी राखौ
सब विधि तुम्हीं को भीर । दुख से बहुत व्याकुलहैं
स्वामी बिकलहै मेरो शरीर ॥ जो प्रभु कृपा करत मो
ऊपर कटत सकल भवपीर । बालदासी सबविधि ला-
चारहै दायाकरि करोगँभीर ५६ कबधों मिलनहोइ मेरे
पियसों । निशि बासर मोहिं कल न परतहै यही लाग

लागी जियसों ॥ बालापनकी सनेहिया कब मिलेंगे
 यही लालसा लगी मेरे हियसों । बालदासी के स्वामी
 प्रभु तुमहीं हो अवर सरोकार न राखो जगसों ५७
 अबतैं का मोहिं मारत ठानके । शठ सुधिनाहीं रघुनाथ
 बानके ॥ बड़े प्रताप जग जाहिर नामके । रक्षपाली
 प्रभु तुमहीं जननके ॥ मन बांछित फल देत सबन के ।
 बालदासी अकुलात दरशनके ५८ जयजय जगजननिदे
 विधन्ययोग माया । कियाजोतेरेमनमें आईकोईनकिया
 छाया ॥ सुधिवुधिसबहरि तैलीन्हो कौनकरैं उपाया ।
 माताको चाहिये कृपाघनेरी दासीपर अजहुं करबेदाया
 ५९ कालकराल कठिन जगमाहीं । भक्षणकरतहै यह
 क्षणमाहीं ॥ जोजन्मतसो बचतैनाहीं । अहंकारको कर
 तवृथाहीं ॥ अन्धज्ञानसे समुझतनाहीं । राममोहिंनारी
 दुखीको बेगिपूछत नाहीं ६० केहिबिधिनाथघरों अवधी-
 रा । तुमहूँनहिं बूझतमोरिपीरा ॥ जगसेविदागीकी कब
 देवोगेबीरा । नारीकी अरज सुनोगे कबस्वामी तुमबिनु
 कहो किससोंहैभीरा ६१ भजतरामसो करमके खटा ।
 यहिजगआइ नामनालेहीं सोनर कहवावतहैं खोटा ॥
 अन्तकाल जबआइ पहुंचिहै यमपुरजाइखेहैं यमसोंटा ।
 बालनारी सबविधिसेहीनीहै प्रभुमें सब नारिन सेछोटा
 ६२ यह दुनिया स्वारथके लोभी करतकपट व्योहार ।
 मायादेखिकै नइपरतहै भुकिभुकिकरत जोहार ॥ राम
 नामकोलूटिन सकतुहै यमपुरकरिहै पुकार ॥ बालदासी
 को आशप्रभुतेरी तुमबिनुकौन आधार ६३ देवी दरशन

में नित उठि चाहीलै । हाथजोरि विनती करतोहैं बार
 बार शिर नाहलै ॥ सरब कल्यान करौ मेरो यही वर मांगीलै ।
 बालदासीको तेरोही शरण भावैलै ६४ दीनानाथकी शरण
 गोविंद की धरम अरज सुनते तुम नाहीं मेरो छूका करम ।
 तेरो यश सुनि प्रताप बढ़ी अपनी नाम धरावत तोहिं लागत
 न शरम ॥ तुम अंतरायामी में का कहों स्वामी जानत हौ
 सबही का मरम । यहां लोग उपहांसी करत हैं हांसी जान
 त नाहीं सांची बानी की धरम ॥ भाव भक्ति की मारग
 छोंड़िके जानत नाहीं प्रभु तेरो गम । बालदासी प्रभु चरण
 की किंकरी कृपा करि मोपर कर दे रहम ६५ नाथ सुनत
 नहिं मोरी बतियां । एदइ तलफित लफि जिय जाय दिन
 रतियां ॥ कवन के भरोसे बिसराय प्रभु दीन्हो तुम विनु
 कहो कवन मेरि सथिया । एकनारी दूजी मतिकी हीनी
 तोजे मेरी नीच है जतिया ६६ सखि एरो बदरिया का
 घर ही । श्याम नहिं आये रेनि में तल फिर ही ॥ दादुर मोर
 पपीहा बोलैं कोकिल शब्द सुनाय रही । ऐसे समय
 कान्ह घर नाहीं मोहि नारी को बिरह मारि रही ६७ उमड़ि
 घुमड़ि घनघेरि आयो बदरा । श्याम नहिं आयो लरजत
 मोर जियरा ॥ झिल्ली झहनात मोर शोर करत भारी क्षण
 क्षण बेधत मोर हियरा । चहुं ओर से बिजुली चमकै गरजि
 तड़पि मारत मोर जियरा ॥ मोहि नारी बिरहिनि को
 अकेली जानिके पिय पिय रटत है पपिहरा ६८ नइकै चलुरे
 चार दिन की जिंदगनिया । अहंकार किये भल नही काम
 न करि है जबनिया ॥ रामनाम को सुमिरन कीजै छूटि

जैहै यमकी फंसिया । बालदासीपरदया प्रभुकीजै होय
 निर्मल मेरी मतिया ६६ प्रभु दुखमें मोहिं मारिके तब
 सुनबे । नामजपतठ्याधाभईहै अपनीनामधराइकेयशलेबे ॥
 बड़ी आश लगीरही मोरीनाथचरणमें बेगी पड़बे । बाल
 नारी बहुतजेरभईहै बोललनाव कवपारकरबे ७० देखो
 आयेगोपाल मेरी गलियों में । उनकीबन्शीकीशब्दपड़ी
 कानोंमें ॥ एरीसखी रहिनजात मोसोंमहलोंमें । उनकी
 सरतिभरीहै मेरेनयनोंमें ॥ तनमनहरी अपने मटकनमें ॥
 मैदासी बलिहारीनाथके चरणनमें ७१ आखिर मटिया
 में मिलजाना । यहदेहीको गुमानन करना ॥ चारदिना
 की यहहाट बजरिया फिरसाहबघरजाना । किसीसेद्रोह
 नकरना ॥ सर्वमयी परमेश्वरजानो सबसेमिलकेरहना ।
 रामनामकोचेतुरेमनुवा नाहींतौ अन्तमेंपछिताना ॥ कोई
 नहिंबचिहै कालबलीसे औसरबीते क्याकरना । मेरोकहा
 तू मानतनाहीं अयअहमक नादाना ॥ अपने मालिकको
 जोगहि थामै वहहै घाघपुराना । तुमतौप्रभुहो गरीबने
 बाज दासीका यमपुरको दुखहरना ७२ ए सीताराम
 भरोसानाहीं कोईकी । दशौ इन्द्री बिफरी मोसेगइली
 एको ठिकाना नजानोमतिकी ॥ यहदेहीसे चकभईहै हो
 इहै सजाय अवशि यहिजीकी । कपटकरी गिराय मोहिं
 दोन्ही मैंनहिंगतिजानी दगाबाजकी ॥ अबकीबार उबा
 रौ प्रभुमोहिं फेरनाहीं संगतिकरिबे कुचालीकी । कोई
 विधि निस्तारन होइहै कृपाकरिउद्धारकरोबालनारीकी
 ७३ नाथविहारी गिरिवरधारी मोहीभाया । मोहिंऐसी

पतितपर करिहौकबदाया ॥ जासें शुद्ध होइ है मोरिकाया ।
 बालदासीपर श हरिये अपनी माया ७४ एमन रामनाम
 को करले लइनिया । यहबनिजारीमें बहुत नफाहै सब
 विधिवनिहै गतिया ॥ पूरा व्योपारछोड़िके जियरा का
 ले करवैकचिया । बालदासीकी आश पुरायो कबहुं न
 घटै तोरि नामविजयिया ७५ एमन कोई नहिंपूछिहै तोहिं
 बात । वृद्धभये तनकांपनलागो उपजीकफ पित बात ॥
 सुत बन्धु परिवार लोगसब इनकेमइजन मात । यमदूत
 फांसीलगै इ घसिटिहैं फिरि फिरिचितवत जात ॥ रामना
 मरटुरेजियरानाहीं तो अघतोहिंखात । बालदासीकोसम्हा
 रोनाथबेगि बहुतजिय अकुलात ७६ लवकुश कोशरणधरों
 में धायके । बेगी दुखमेराजइहैभागिके ॥ जानकीनन्दन
 रघुनाथके लालहौ सबजननके प्रतिपालकरनके । बाल
 दासी सबविधिअनाथहै बेगिकृपाकरो दुखिनीजानके ७७
 रामकी आशमेंलगेरहु भाई । सब विघ्नोंको काटि कृपा
 निधि दुखतेरोदेइ छोड़ाई ॥ यह बिश्वासतजौ जनिभोरे
 की नाथसे कछुनबसाई । नारीलखिदाया प्रभुकीजै कहां
 लगि जीव समुझाई ७८ ॥ कजरी ॥ प्रभुमोहिं कुदेशवामें
 नाइके लगव लेफँसिया । बिपतिपड़ेकोइ नाहिं होत स
 थिया ॥ भाव भक्ति की मर्म नजानै आंख तरेरी उकठत
 जतिया । ज्ञानीहुईहौ आवत हैं ताकी भरष्ट होजात
 मतिया ॥ तीनिहुंलोकमें ठिकानानाहों लगवल मोरइहइ
 के लिखल पतिया । इतनेहुपर नारीको बूझव दुखवाकी
 अवरकछु भुगतइबवकिया ७९ मेरी हक्कालगी दुखधका

केमारे । मेरे अवगुण को खियालकरैना प्रभु कांपति
 हियमेरो डरकेमारे ॥ भारी अधसमुझिगिरिजातिहैं वि
 गडीनाथविनु कौनसम्हारे । बालदासीत्राहित्राहिपुकार
 तिहैसबविधि रामतुम्हींके भारे ८० करगहेचाप धनुराम
 कृपाल नयनवड़े रतनारे । माथे मुकुट भालतिलकसोहै
 अलक लटकैं घुंघुरारे ॥ श्रवणकुण्डल युतिरवि निन्दित
 पीताम्बरकी कवि न्यारे । बालदासीपर कृपाबेगि कीजै
 बहुत सहायो दुखभारे ८१ कर्मसों कछु न बसाइ सुनो
 भरत मेरीबात । कैसे नगर अयोध्याजाऊं पिता आज्ञा
 अपेल मरुखकाईजानहै धरकी नहिंबात ॥ सबको पालन
 कीजियोजी तुमहींहो आधार । हमहुं जातहैं वनको क्या
 कुल होइहैं सबमात ॥ यहसुनि भरत देहसुधि बिसराई
 चरणपरै लपटाय । त्राहित्राहि करिबोले कंपितभये सब
 गात ॥ बारबार उर लाइके बहुविधिसे समुझाइ । विदा
 कीन्हो रघुनाथतब मनहिं बहुतसकुचात ॥ गतिमतिमेरी
 मारगई अधनेलीन्हो सान । जबलग दया न मोहिंनारीपर
 करिहौ जन्म वृथा मेरोजात ८२ हनुमंतज कीन्होंभीराई
 सुनोभरत चितलाई । सिंधुनांघि लंकाजराई बागविध्वंसो
 जाई गरवतोर रावणको सियाको खबर जनाई ॥ शक्ती
 लागी लक्ष्मणके जब सजीवन आनि गंधर्वमार ढहाइ
 लषणको जियाई । मोहिं नारीकी ताकतनाहीं किभजन
 प्रताप मैं जानों जो प्रभुकृपाकरिहैं मोपर ज्ञान दृष्टि
 खुलिजाई ८३ रावणके चरित्रकहैं सुनोप्रिया महरानी ।
 मेघनादसें भईलड़ाई लक्ष्मणशक्ती लागी ॥ तेहि अवसर

ऐसो कारजकीन्ही हनुमंत सजीवन आनी । रिपुसाधन
को चले लषणजी प्रण क्रोधकरीभारी । मारामेघनादकी
छातीवाण शरासन तानी ॥ लंकागढ़की चारदुवारी
तहं दश शीश रजधानी । जाय जगाइसि कुंभकरण
को वृत्तान्त सुनि कीन्ह गलानी ॥ लंकाजीति चलेरघु-
नन्दन पुरी अवध के वोर सब सुर दुंदुभी बजाय के
बोलत जैजै बानी । चढ़े विमान चलि जावखरारीज नकी
सों कहत बुझाइ ठहाइ देखि कुंभकरण को सिया बहुत
डेरानी ॥ कहत सुनत नवल इतिहासा अवध निकट
प्रभुआये हनुमत खबरि जनाये हरषिगये भरत मातन
पहं कूटीसकल गलानी । आरत मेरीसुनो रामजी अध-
म नीच में नारी तुम्हरीकृपा बिना रघुनन्दन सबविधि
हीन जियाहानी ८४ जबबढ़े असुर अभिमानी तब भई
धर्म की हानी । धरती पर जब भारभई है गौरूप ब्रह्म
पुर समुहानी ॥ कहैविधी सुनिधरती बाता मोर नहींहै
बानी । वोही प्रभु दीनदयाल है तोर मोरकरिहैं निगह
बानी ॥ सब देवन मिलि अस्तुति कीन्ही भई अकाश
बानी । पुरबहिं दशरथ को वर में दीन्ही उनके बचन
में मानी । जन्म बजाइ तुवहित अवध पुर निडर होहु
मानि ममबानी । जन्मे जबहीं त्रिभुवन स्वामी दुंदुभी
बजाय कहि जैजैबानी ॥ अद्भुत रूप देखिके माता चकृत
होइ अस्तुतिठानी । कैसेअस्तुतिकरैं तिहारी तुम जगत
स्वामी मैंहैं अज्ञानी ॥ बिकल देखिके रोदनठानी ।
तबमाता आपन सुतजानी ॥ आरती करत सकल

नारीमिलि कौशल्या की सुकृत बखानी । बाल चरित्र
 कीनविधि नाना । दशरथ जन्मसुफल करिजानी ॥ भये
 कुमार जवरघुकुल दीपक बाण शरासन तानी । सब
 दैत्यन को कीन्ही छ्यकारा देवताभये रजधानी ॥ नि-
 चरजीति अवध प्रभुआये भरतकी मिटी गलानी । बैठे
 प्रभुसिया सहित राजपर सब माता हरषानी । ऐसेयश
 अब गाइरामको बालकुंवर हरषानी ८५ जो सबकहत
 मोहिं चेरी रामकी बहुत बड़ाईहात करमको । सुकृत
 पुण्य पुरुबुलको होती तबमें पावों ऐसी पदवी को ॥
 विश्वपोषण रघुवीर कृपाला उनकेहाथ अभिलाष जनन
 को । बालदासीपर कृपाप्रभु कीजै उदय करिदेमेरेभाग
 को ८६ रामउदार सुजानहैं ऐसी करत सबविधि प्रति
 पाल जननको । दुख दारिद्रहरतहैं ततक्षण जोचितलाइ
 भजैरघुवरको ॥ ऐसेप्रभुदाता छोड़िजो सुमिरै आनको
 भरमत कष्ट पावत यमपुरको । काहे नाहीं मेहर करत
 दुखीनारी परऐसी अभागिन भईहों करमको ८७ भरो-
 सारघुनाथका अवर कौनआशा । दुख जंजालमें अरझि
 मेंमरतहों लोगसब देखत तमाशा ॥ सब विधि अनाथ
 जानि मोहिं स्वामी देहुचरण तरबाशा । जोप्रभु मेहर
 करदे मोहिं नारीपर अघको होयजाय नाशा ८८ राम
 खेवइया मेरी झांझरीनइया । गहिरी नदिया अगमबहै
 धारा तुमहीं पार लगाइया ॥ मारुत चौबाई बहतझक
 झोरा तापर भवरीमेंका करौदइया । बालदासी बहुत
 अपराधीहै क्षमाकरिवेगि उबारौ गोसइया ८९ भग-

वत नैकनजरनहिं फेरी । ब्राहित्राहि करि गोहरावति हैं
 सुनत नहीं तैं मेरी ॥ अनेकन अधिन को तारे तुम स्वामी बड़ी
 तक सो रहै मेरी काहे नाहीं द्रवत हौ तुम नाथा बालदासी है
 तेरी ६० भइ बैरी मोर करनी अवशिके । यह ते प्रभु द्रवत नाहीं
 अध मोहिं मारत घेरि घेरिके ॥ शिव चतुरानन को सुर थाह
 न पावत मैं कैसे जानों तेरे अन्त के । जो प्रभु कृपान करि हौ
 मोहिं चेरी पर गलियन गलियन फिरौंगी भरम के ६१
 दीनानाथ कबूल करत नहिं अरजी । जो तुम्हरे मन ऐसी आई
 काहे को नाथ मोहिं सिरजी ॥ माया से मैं चूकी ॥ स्वामी
 काहे न तुम प्रभु बरजी । नारी जन्म देइ भक्ति नहिं
 दीन्हीं मैं अभागिन ॥ हरजी ॥ आपन आश कुड़ावत
 नाथा नरकी करत हौ करजी । रटत रटत मैं हारि गई
 हौं अब का चेरी को होत मरजी ६२ मेरो मन हरि
 लोन्हों श्याम बिहारी । रूप अनूप मारमद मोचन आनि
 बसी सखि हिया मेरी ॥ ऐसी ब्रत करें हम सब मिलि
 जेहि विधि मेरो पति होवै गिरिधारी । अभिलाष पुरवो
 तुम स्वामी बार बार मैं जाऊं बलिहारी ॥ प्रेम प्रभाव
 सों द्रवै नाथा मीजी पीठ सखियन की मुरारी । नारी
 को विरह दुख हरता यदुनन्दन करदे नजर सखियन
 को मैं चेरी ६३ मेरी रघुनाथ भंजो दुख पीर । निश्चर
 मार कीन्ह छयकारा कहवाये बड़ बीर ॥ बिनु फर
 शर मारि चको मारे शत योजन पड़ा जाय तीर ।
 अबला करम थकि गई तेरी दासी काउन धरावत धीर
 ६४ अब गणपति के चरण मनाऊं । जासों मैं निरमल

मतिपाऊं ॥ कृपा करौ गणनाथ गुसाईं बारबारमें पद
 शिरनाऊं । बालदासी का दुख देहु छुड़ाई में तेरी चेरी
 गुणगाऊं ६५ श्रीरामचन्द्र कृपालुके पद गहतत्रिविध
 तापहरें ॥ ऐसी रतनजोछांड़ि कांच गहै सो जाइ नरकमें
 बास करें । भक्ति भावके मरम नजानैं झुठी बात कहि
 उद्भरें ॥ सो अन्त यमपुर जाय त्राहि करें । त्रिजगजो
 इनिसों बचाचाहै रामनाम आधारकरें ॥ रघुनाथ मालिक
 को जो गहि कै थामैं मुक्ति पदारथ सो न टरें । बाल
 दासी बहुत दुखनी है कृपा कटाक्ष मोपर कब करें ६६
 कठिन कठोर रघुराई कल्प नहिं बूझै हो । दीनानाथ
 कहवावत दरद नहिं आवै हो ॥ बालपन से शरण में
 गहिकै यहीफल पाईहो । नहिं योगी नहिंतपसी नारी
 अवधजानि सांसत मेरी कीन्ही हो ६७ मन रामभजु
 चितलाइकै । ऐसीसुन्दर देहियां पाइकै ॥ धरु शरण
 वेगी धाइकै । काम क्रोध मद मारिकै ॥ तन मन धन
 सब वारिकै । माया मोह सब तजिकै ॥ सकलबासना
 छोड़िकै । नाथ चेरीको भक्ति दे कृपा करिकै ६८ करु
 मन रामनाम विचार । योगजप कछु काम न आवै
 कलियुग में यही उबार ॥ अनेकन तरि गये नामजपि
 कै केवल यही आधार । बालदासी प्रभु चरणकी आशी
 करदे मेरा उद्धार ६९ छांडुमन कपटका व्योहार ।
 नाम जपिकै आश पुराइकै कहाँलगि सहिवे दुख
 मार ॥ यह में कौड़ी पैसा दाम न लागै प्रसिद्ध है
 संसार । जो नहिं मनबे कहा हमारा खारवै यमपुर

मार ॥ दूसर उपाय उबरनका नाहीं देखु हृदय विचार ।
 अघ कराल टारे नहिं टरिहै सुनुनारी गँवार १०० करु
 मन रामनामको साथ । भुकीभुकी नाउतें माथ ॥ नाहीं
 तौ कछु न लगिहै तेरेहाथ । नारीका जन्म अकारथजात
 है कृपा करो रघुनाथ १०१ लिखीन विधि मोकों राम
 की भगती । नाहीं तौ द्रवत नाथ मोपर सरती ॥ तब
 कैसेज्ञानमोर हरजाती । नाहीं तौ दुख मोकोंकैसे पेरती ॥
 अघ देखत मोकों भागजाती । नारीपर नजरकीजै करदे
 भगतन की चेरीमें मोरभरती १०२ मैं भवजाल में फंसी
 मरतीहैं । तेरोहिआश प्रभु जोहरही हैं ॥ दुख भंजन
 रघुवीर कृपाल हैं । चेरीकी खबरि बेगिलीजै तेरो ही
 भजन में करतीहैं १०३ न जानी रामरिझत हो कैसे ।
 मैंहैं सबविधि तेरे भरोसे ॥ अपनी करनी की खुटाई
 समुझिके कांपत हियमेरा तेरे डरसे । एको विधि द्रवत
 नहिंनारी परलाचारहैं अपने करमसे १०४ राधाप्यारी
 काहेकरीतमान । यह ठंग कवन सिखाई छोड़दे ऐसी
 बान ॥ बहुत भांति समुझाइहारी ललितातब रिसयान ।
 कही तुझैकाह भयोरी प्यारी नाथ सों करति गुमान ॥
 समुझि मन विचार कररी चाहिये न ऐसीसान । तुम
 विनु श्याम ब्याकुल पड़ेहैं मेरो कहा तू मान ॥ सुधि
 बुधि सब भूलि गये हैं खान पान बिसरान । यहसुनि
 कै प्रेम बढो तब दरश को लोचन ललचान ॥
 श्यामाश्याम मिले बहुभांती सबविधि हृदय जुडान ।
 बालदासी पर कृपा प्रभुकीजै तुमविनु रक्षा को करैमेरी

आन १०५ भोलादिगम्बर ओढ़े बघम्बर तीनि लोक
 के नाथ हैं । त्रिलोचन जटाजूट मंगशशि त्रिपुण्ड्रशीश
 पर सो हैं ॥ पंचवक्त्र कमलनेत्र विशाल श्रवण कुंडलद्युति
 रवि लज्जित हैं । नीलकंठ भूषण भुजंग कपाल माल
 मंदारमाल उरमाहँ विराजत हैं ॥ भस्मअंग मरदन
 मयन पाणि त्रिशूल सोहत हैं । करपर गौर करुणानि-
 धान गिरिजापती कैलास निवासी हैं ॥ वामभाग गौरी
 अरधंगी जगदम्बा शोभा गुणखानि हैं । भांग धतूर आ-
 ककी फांकत मृगकाला बिछाये हैं ॥ वृषभ वाहन पर
 चढ़ें त्रिपुरारी जयजयजयचरण बलिहारी हैं । डिमिकि
 डिमिकि डमरूगतिबाजें प्रेम उमंगत तब नाचत हैं ॥
 नारी पर कृपाकरत सदा शिव काम जारि रतिको बर
 दीन्हो है । दासी जानि शरण मोहिंदीजै बालचैरी य-
 हीमांगती है १०६ सरयू मुक्तिकी देनेवाली है । नाम
 लित सब पाप छैजाती है ॥ दरशन करत ज्ञान दृष्टि
 खुलजाती है । पति पावनी नाम सदाई है । धन्यधन्य
 सरयू महरानी है । धरमी पापी नहीं तैं बरावती है ॥
 भाग सुहाग बढ़ावनेवाली है । धनि वहजीव जो निक-
 टनिवासी है ॥ तनि रेणुका पड़ै जाके पर ताहि देखि
 यमदूत मुंहकाली है । तैरी कृपाबिनु मैं दासीकी गति
 नहिंबनी है १०७ जैतिदेवी सरयू राम गंग शरण तेरी ।
 परत पायं हरत पाप तापनकीठेरी ॥ सम्पति सुभाग्य
 शील शोभा तासु घेरी । राम चरण भक्ति शक्ति शंभु
 समदेरी ॥ दानि राम के समान सरयू रानि मेरी ।

काम क्रोध लोभ मोह परी पांवबेरी ॥ तन मन क्षण
 बारबार रामरूपहेरी । एहीबिरमांगतिहैबाल कुंवरचेरी ॥
 १०८ अक्रूर पापी ले गया सखिश्यामको दूरी । कैसे
 जीवरहैगामेरी मारिगये कलेजेमेंकूरी ॥ नाहक गुमान
 यदुपति से कीन्ही बहुत भई कसूरी । एक पल जुदा
 नहिं होते थे अबमेरी भाग अंधेरी ॥ यशुदानन्द व्या-
 कुलहोय कहतहैं कहां गये कान्ह मेरे प्राण सजीवन
 मूरी । बिरह व्याकुल मैं नारि पुकारति हों बेगी नाथ
 दरशन देवहुरी १०९ बिन्दादेवी सम धन्य न कोई ।
 जाको सबसुर शीशनवावत ताके शिरपरचढ़तहै सोई ॥
 जो ठाकुर को भोग लगावे तुलसीपत्र विन कबूलन
 होई । नारीकी दारिद्र्य दुख हरिये महरानी तुमबिनमेरी
 सुनै न कोई ११० परमात्मा परमेश्वर स्वामी । तुमर-
 क्षकहो जनके तीनिलोक के अंतरयामी ॥ पाप मोचन
 नाम तुम्हारा ऐसे प्रभुकीनमामि नमामी । बालदासी
 पर कृपा बेगि कीजै मैंहैं दुष्टिनी पापिनी गामी ११०
 जो गहि राम नाम गुणगावै । अघनिकट उनके नहिं
 आवै ॥ संशयबिहंग उड़ावै । जब नाथ के चरणन चित
 लावै ॥ तब मन बांछित फलपावै । दूसरी आश नहीं
 हियभावै ॥ ताको माया नहिं भरमावै । काम क्रोध
 मदलोभ बेड़िया तहां चरन नहिंपावै ॥ बालनारी पर
 कृपाप्रभु कीजै मुक्ति बरदान दासी पावै ११२ लक्ष्मी
 तेरी लीला अलख है । नियम धर्म आचारतुमहीं से
 व्योहार होतहै ॥ जहां तुम तहां सब विधि सों सनो-

मान होत है । जापर कृपा करि देत महरानी ताकी बड़ी
 मरयाद बढ़त है ॥ जहां अनुकृपा करती हो तुम से जन
 कौड़ि के तीन तीन है । बेगीदाया कीजे मोपर तुम बिन
 दासी को दुख मारत है ११३ दाया करदे राम सौज
 करै बालदासिया । ऐसी कृपा करदे प्रभु मोपर जेहि
 बिधि बैकुंठ में सदा करै बसिया ॥ हाथ जोरि बिन्ती
 करती हैं कबहीं नलगे मोको यम फंसिया । नारी की
 अरज बेगि सुनिये रघुनन्दन तेरी शरण की है मोहिं
 असिया ११४ ॥ होरी ॥ हमारी सुधि निपट बिसारी फागुन
 ऋतु आई । चूकलघू बहुत करि जानी आये नहीं कन्ह आई ॥
 केसर कुमकुम अरगजा घोरी खेलत कुब्जा संग जाई ।
 मैं अबला को विरह से मारि कै का पावोगे यदुराई
 ११५ कहां री ये चितचोर कन्ह आई । आमेरि रंग
 से भिगोइ चुनरिया ॥ रंग अबीर की धूम मची है
 नभ गुलाल सों छाई बदरिया । चलौ सब मिलिके
 श्याम की पकड़ लेउं चुकाये सब दिन की कसरिया ।
 बालदासी पर कृपा प्रभु कीजे कब मेरी लेउगे खब-
 रिया ११६ सब तजि भजन करो रघुनाथ की । सुख
 सम्पति परिवार बढ़ाई यह सब हैं दिन चारकी ॥ दृढ़
 विश्वास रामपद नेहू नहिं चिन्ता कछू बातकी ।
 बाल नारी की बुधि रचि देहु आश निज नामकी ११७
 बसन्त ॥ आज खेलत बसन्त सियाराम नरेश । तेहि समय
 की शोभा कैसे बरणों मानों चहुं ओर बसन्त ऋतु तन
 धरि कियो प्रवेश ॥ अनेकनको प्रभु मुक्ती पदवि दीन्ही

अनेकन को कियो धनेश । मेरी भी आश पूरीप्रभु कीजै
 बड़े दाताहो कोशलेश ॥ तुमको कछु अदेन प्रभु नाहीं
 देहु भक्ति बरबेस बेश । याचक सकल अयाचक कीन्हों
 बाल चैरीको काहेन काटत दुख बेड़ी कलेश ११८ ॥ होरो ॥
 ब्रजमोहन लाल बड़े रसिया । मोर पक्ष शिरपर सो-
 है मोतीमाल जनु बक पंतिया ॥ पीतांबर फहरात
 बदन पर हाथ लिये प्रभु लकुटिया । एकोगृह उनसे
 नहिंवांची घरघर करतलंगराई सखिया ॥ मृदुमुसकानि
 ठगोरी डारी मेरोमनहख्यो बजाये बसिया । बालापनसे
 आश मेरी लगी है अपने पद की कीजै दसिया ११९
 चौपाई ॥ रामचन्द्र तेरे चरण कि प्यासा । करहु दयामम
 पुरबहु आसा ॥ काहकहाँ कहिजात न माई । अपनेमन
 की कुटिलताई १२० ॥ सोरठा ॥ जैरघुबर रघुनाथ जैजै
 सीतावररमण ॥ करिये मोहिं सनाथ बालि कुंवरी
 कहै हे प्रभु १२१ ॥ चौपाई ॥ राम भजन बिनु सरबस
 गँवाईसो कैसे अन्तमें करिहै सहाई ॥ कामक्रोधबहुत
 दुखदाई । यहसब सो नहिं जोर बसाई १२२ ॥ सोरठा ॥
 जयति जयति जयभानु करिये मोहिं सनाथ अब ॥
 होइ तेजकी खानि अहो सूर्य हे वरुण प्रभु १२३ ॥
 चौपाई ॥ तुम्हरी माया प्रबलहै साई । शिव बिरंचि कोउ
 पार न पाई ॥ जो नहिं कृपा करौ रघुराई । तौ भव
 नांघि पार कैसे जाई १२४ ॥ दोहा ॥ जै रघुबर रघुनाथ
 की जैजैजै श्री रंग ॥ बाल कुंवरि कहँ तारिये पापहि
 कीजै भंग १२५ ॥ चौपाई ॥ बहुत कष्ट दुखपायों भारी ।

अब प्रभु सुरति लेहु हमारी ॥ दुखभंजन रघुवीर कृ-
 पाला । करौ नाथ मेरो प्रतिपाला १२६ ॥ सोरठा ॥
 महाराज श्रीराम पुरवो मेरी कामना ॥ होय परमनिज
 धाम बालकुंवरि कहे हे प्रभु १२७ ॥ चौपाई ॥ शरणा-
 गत हौं दीनानाथ । अब प्रभु मोहिं करहु सनाथ ॥
 बालनारी कुटिल अज्ञानी । कृपाकरि नाथ करहु स-
 ज्ञानी १२८ जैजैजै सिय रामचन्द्रहरि । जै दशरथ कुल
 कमल दिवाकरि ॥ हे प्रभु बेगि दरश अब दीजै ।
 बालकुंवरि कहँ अभय करीजै १२९ ॥ दोहा ॥ हे प्रभु
 दीनानाथहो भक्तो दीजै मोहिं ॥ बालकुंवरिकी अरज
 यह मेरीलज्जा तोहिं १३० ॥ चौपाई ॥ रामचन्द्र प्रभु
 कृपाकरौ अब । जाते भुक्ति मुक्ति पावों सब ॥ भक्ति
 अमरपद बेगिहि दीजै । बालकुंवरि कहँ अभय करीजै
 १३१ ॥ दोहा ॥ बार बार विनती करै बालकुंवरि एक
 नारि ॥ बेगि कृपा प्रभु कीजिये माधवकृष्ण मुरारि
 १३२ ॥ चौपाई ॥ दीनानाथ नामहै तेरा । पातकबेगि हरौ
 अब मोरा ॥ बालकुंवरि एक अरजी करती । परापश्यती
 होवै बहुती १३३ ॥ सोरठा ॥ हे प्रभु सीतानाथ बेगि
 दरश अब दीजिये । हे रघुवर रघुनाथ भक्ति अतिहि
 अधिकाय अब १३४ ॥ चौपाई ॥ अहो विष्णुमें विनवों
 तोहीं । जाते ज्ञानवृद्धि होइ मोहीं ॥ हे शिव मोपर
 किरपा कीजै । बालकुंवरि कहँ अभय करीजै १३५ ॥
 सोरठा ॥ जै गणेश सुखकन्द बुद्धि प्रकाशन शुभकरण ।
 महामोहको फन्द ताको काटनहारतुम १३६ ॥ चौपाई ॥

जै अम्बे जगदम्बे शक्ती । बालकुंवरी कहँ दीजै भक्ती ॥
 सिरजनि पालनिहारी देविहै । लयकारिनि पुनि सुख
 कारिनिहै १३७ ॥ सोरठा ॥ देवता तेतीसकोटि तिनहीं
 को मैं सुमिरण करै ॥ हैंमें अतिही छोट मोट बेगि
 करदीजिये १३८ ॥ भजन ॥ मेरे रघुनाथजीको सोहे
 रतनारे नैना । शीशमुकुट मकराकृत कुण्डल मृदुमुस-
 कानी मधुरी बैना ॥ चन्दन भाल खौर अतिराजै ध्यान
 धरत डरहोवै चैना । बालदासी यहीबर मांगतिमैल
 छुटै दिलहोवै ऐना १३९ मानो मानो तैं मनमेरी
 बतियारे । अन्तमें कोई नहिं सथियारे ॥ रामनामको
 सुमिरणकोजै नाहीं लगिहै यमकी फँसियारे । बाल
 दासी पर कृपाप्रभु कीजै दिव्यहोइ मेरी मतियारे १४०
 उठतीहै समुद्र ऐसी लहर मनमें । अघसे जिय रहताहै
 गममें ॥ नहिंजानों बिधि क्यालिखी भालमें । नाथ
 दासकी निबाहहै तेरही कृपामें १४१ रामबिनु दुखमें
 कोई न साथी । आपु स्वारथी सबको देखो नहीं मिले
 परमारथी ॥ अन्तकाल जब आइ पहुँचिहै यमदूत लै
 जैहैं नाथी । दासीके हृदयकी बुझावोनाथजू हृदय च-
 लतहै भाथी १४२ कब आवेंगे श्याम कन्हैया । कहाँ
 गये दधि माखनके खवैया ॥ फेरकब देखोंगी बंशीके
 बजइया । वृन्दावनको सुनी करिगये मथुरामें बाजी
 बधैया ॥ अक्रूर पापी लैगयो मेरो प्राणहरिकै नाथ
 बिन कैसे जियौरी में दैया । हमैं त्यागि मथुराको सि-
 धारे कुब्जासां जोरी सनेहिया ॥ अबला लखि दाया

प्रभुकीजै तुमविन को आशपुरैया १४३. समुझि मन
 तेरी नहींहै धरिया । पांचतखकी बनी पूतली तामें भँ-
 बरा बसिया ॥ यह देहियांकी गुमान न कीजै विनशत
 लगी न बेरिया । अन्तकाल जब आय पहुंचिहै कालै
 जावे मुहँकरिया ॥ जो नहिं भजिहै रघुनाथ कृपानिधि
 खावैतैं यमपुर मरिया । यह विचार करलैतैं बालनारी
 भजिले राम सबेरिया १४४ दो नैना मेरो अरुझो सँ-
 वलियामें रमिरहारे । नन्दलालकी सलोनी मरति मेरो
 हिया बसोरे ॥ इकदिन कान्ह औचकही मेरैगृहआयो
 मेरो मन हरोरे । रूप अनूप मारमदमोचन में नारीको
 ठगोरे १४५ ॥

इतिश्रीविनयप्रकाशसम्पूर्णम् ॥

मुंशी नवलकिशोर सो, आई, ई,के छापेखाने मुकाम लखनऊ में छपो
 अगस्त सन् १८८६ ई०

*